International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—3

शोध पत्र-हिन्दी

Dec.-09—Jan.-2010

मानव चितंन के विविध आयाम: जिंदगी मुसकरायी: कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

* प्रा. डॉ. जयश्री बहाटे

*व्याख्याता, कला, वाणिज्य व गृह विज्ञान महिला महाविद्यालय, जलगांव

मनुष्य जीवन एक रंगमंच है। उस रंगमंचपर मानव जीवन के विविध कार्य, परिस्थिती और उद्देश्यानुसार अभिनय तथा कार्यकलाप चलते रहते हैं। उन्हीं कार्यकलापों को आयामों को लेखक कभी उपन्यास में, तो कभी कहानी में, नाटक में, निबंध में तो कभी गद्य की लघुगद्यविधाओं में आबध्द करता है। निबंध ऐसी ही एक रचना है जो मानव-चिंतन के विविध आयामों को प्रखरता से चित्रित करता है। निबंध - नि+बंध - विचारों को अच्छी तरह बांधना। विषयानुरूप निबंधकार अपने विचारो को अच्छी तरह रचनाबध्द करता है। इसलिए कहा गया है निबंध व्यक्तित्व का प्रकाशन है।(1) निबंध रचना में निबंध कार का व्यक्तित्व, सरलता, सुगमता, स्वच्छन्दता, आत्मीयता और रमणीयता विद्यमान रहती हैं। 'जिंदगी मुसकरायी' निबंध संग्रह संपूर्ण साहित्य जगत के लिए अमूल्य धरोहर है।

'जिंदगी मुसकरायी' निबंध रचनाओं में राजनेता, अधिकारी, कर्मचारी, सामाजिक कार्यकर्ता, किसान, मजदूर सभी प्रकारके पात्र हैं जो मानव-जीवन के लिए एक मिसाल बनकर सामने आते हैं। ये रचनाएँ मानव मात्र की पीडा, यातना, त्याग, तप, सुख-दुःख, आनंद, वेदना आदि संकेतो से मार्ग निकालकर समाधान भी देते हैं। मानव-जीवन के सामान्य से सामान्य प्रसंगोंको निबंधों का सूत्र बनाकर मानव जीवन के लिए नयी राह प्राप्त हुआी हैं। 'जिंदगी मुसकरायी' की रचनाएँ वैचारिक चिंतन, सामाजिक चिंतन, सांस्कृतिक चिंतन, पारिवारिक चिंतन, लोकशिक्षण युक्त चिंतन, हास्यव्यंग्यात्मक चिंतन इन स्तरोंपर पाठकों के हृदयपटलपर छा जाते हैं और मानव-जीवन के विविध पक्षोंको उजागर करते हुए लक्ष्य की ओर ले जाते हैं।

पारिवारिक चिंतन - मानव मात्र का सर्वप्रथम सम्पर्क 'घर-परिवार से आता है। परिवार में जितने सदस्य होते हैं उनमें एकसूत्रता होनी आवश्यक है। एकसूत्रता के अभाव में परिवार विचलित हो जाता है। जिस परिवार में एकसूत्रता हो, संतुलन हो, शांति-स्थिरता और विश्वास हो वह परिवार और परिवार का हर व्यक्ति स्वस्थ, शांत और आत्मविश्वासपूर्ण होता है। हर एक व्यक्ति हर एक परिवार सुस्वास्थपूर्ण हो तो समाज - नगर - राज्य - देश भी सूखी और स्वस्थ हो सकता है। तभी 'वसुधैव-कुटूम्बकम्' की भावना फलित हो सकती है। होटल, धर्मशाला और घर का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया गया है कि होटल और धर्मशाला घर क्यों नहीं बन सकते। ईंटो की दीवारों से घिरे स्थान में एक साथ बहुत से स्त्री-पुरुषों के रहने - खाने और बातचीत करनेसे घर नहीं बनता, उनमें यदि एकसूत्रता हो तो वह घर बनता है। हम जिस समाज - व्यवस्था में जी रहे हैं, वहा घर हमारे विशाल जीवन का प्रथम घटक, प्रथम युनिट हैं।

सामाजिक चिंतन - मानव सामाजिक प्राणी है। समाज रूपी शरीर में व्यक्तिरूपी आत्मा बसती है। समाज ही व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास की कार्यशाला हैं। व्यक्ति - समाज - साहित्य एक दूसरेके लिए पूरक है। साहित्य के दर्पण में व्यक्ति और समाज का वर्तमान, अतित ओर भविष्य देखा जा सकता है। सामाजिक स्वास्थ्य के लिए समाज में विश्वसनीय होना, विश्वास उत्पन्न करना आवश्यक है। 'आप कितने विश्वसनीय हैं' निबंध व्दारा इन बातों पर प्रकाश डाला गया है। समाज में रहनेवाले हर आदमी ने आँख खोलकर आसपास देखने की जरूरत है। दूसरों के लिए हम क्या करते हैं इसका भी हमें एहसास होना चाहिए। अंहकार कदापि नहीं होना चाहिए। हमारे आसपास जो मोती है उन्हें भी जानने की जरूरत हैं। आप कितने भले हैं, 'जब वे मुशायरे के कन्वीनर थे' निबंध व्दारा इन बातों को खोला गया है। वृध्दों का और बडों का आदर सामाजिकता का पहला पाठ हैं। 'जब वे रौबी को कमरे में ले गये'। निबंध के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि 'किसी भी तरह मर्यादा में जो तुमसे बडे हैं, वे तुम्हारे साथ समानता का व्यवहार करते हैं, तो उसे उनकी कृपा समझो अपना अधिकार नहीं।'(2) कृपा वह है जो हमें किसी से प्राप्त हो, अधिकार वह है जा हमारा अपना है किंतु उसका दुरूपयोग न हो। सहकार जिंदगी का ताना-बाना हैं, समझौता है एहसान नहीं। समाज में निकटवर्ती सबसे पहले 'पडौस' है। पड़ौसियों के साथ अच्छें सम्बन्ध बनाये रखना सामाजिकता की दृष्टी से महत्वपूर्ण है। संकट या विपदा आनेपर सबसे पहले पड़ौसी ही काम आता है। 'सगा दूर पड़ौसी नेड़े' यह सामाजिक यथार्थ और सत्यता को स्पष्ट करते हुए 'मैं और मेरा पड़ौस' में स्पष्ट किया गया हैं कि, आप में लाख बुराइयाँ हो, उनकी छाया कभी अपने पड़ौस पर न पड़ने दीजिए। याद

रखिए, चोर-डाकू भी कभी अपने पड़ौस में हाथ नहीं डालते।(3) रूढी और परंपरा तथा सामाजिक मर्यादा को स्पष्ट किया गया है - सीता और मिरा के उदाहरण व्दारा। सीता मान-मर्यादा तथा पति-परमेश्वर इन नीति नियमों को पालन करनेवाली और मीरा इन मान्यताओं से संघर्ष कर अपना मार्ग खुद तैयार करती है। मीरा के युगतक आते-आते पतिव्रत धर्म की यह मर्यादा अर्थहीन ही नहीं हुअी, वरन नारी जाति के लिए पाँव की बेडी बन गयी। मीरा सीता की अपेक्षा आधुनिक है और प्रासंगिक भी। सीता का आदर्श तो महान है ही पर मीरा ने अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर सब कुछ की बाजी लगाकर जो उदाहरण प्रस्तुत किया वह मानव जाति के लिए अभिमान की जगह पा गया है। 'जिंदगी मुसकरायी' के निबंध स्पष्ट करते हैं कि- मर्यादा साधन है, साध्य नहीं। वह इसलिए कि सत्य शिवं सुन्दरम् का मार्ग प्रशस्त करे। वह इसलिए नहीं की सत्य, शिवम् सुन्दरम् के पक्ष में बाधक बनकर खडी हो।(4)

स्वस्थ समाज ही स्वस्थ राष्ट्र तैयार कर सकता है। 'लो भिखारी, दूर मजदूर' निबंध में एक सेठ व्दारा भिखारी और मजदूर को देने की वृत्ति में भेद का सुक्ष्म चित्रण किया गया है कि आर्थिक वर्गभेद-वर्गप्रश्न का प्रश्न ना हो। 'स्वस्थ समाज व्यवस्था में न भीखारी के दीनता लिए स्थान है, न दाता के दर्प के लिए न मजदूर की धृष्टता के लिए न धनपति की चतुरता के लिए।(6) आत्मप्रशंसा एक हीनता है उसका शिकार नहीं बनना चाहिए। आत्मप्रशंसा से आदमी स्वार्थी बनता है, समाजहित की अपेक्षा स्वयं का हित ही सोचता है। जीवन में आदमी की स्वार्थी नीतिमता की ओर लक्ष देते हुए प्रभाकरजी कहते हैं - 'मेरा हाथ उनके हाथ में इस तरह दबा हुआ है जैसे कन्यादान के समय दुलहिन का हाथ दुल्हे के हाथ में होता है कि दुलहिन चाहे तब भी उसे खींच नहीं सकती। फिर यहाँ तो सामाजिक मर्यादा का सवाल आता है। 'मैं यह हूँ, मैं वह हूँ निबंधव्दारा आत्मप्रशंसा और मजबूरी का चित्रण करके संदेशा दिया गया है कि मानव समाज इससें बचके रहे तो बेहत्तर हैं। 'रात तकिया उँचा था' निबंधव्दारा सामाजिक दृष्टिसे सिर उँचा करना सिर निचा करना इन मूल्यों का अर्थ स्पष्ट किया गया है।

'जिंदगी मुसकरायी' में 'धोखेबाज को प्रणाम' किया गया है उस धोखेबाज में निहित देवत्व के कारण। धोखे् से ही सही एक सज्जन से कुछ महिनां पश्चात: थर्मस लौटाने के बाद लेखक को पत्ता चलता है कि इसी थर्मस के कारण उसके पत्नी की जान बच गयी है। आवश्यकता और विवशता से यदि कोई चिज ले जाय, धोखे से ही क्यों न हो, किंतु उस कृति से अच्छा नतिजा मिलता हो तो उस धोखेबाज को प्रणाम करना चाहिए। मनुष्य के विभिन्न रूपों के दर्शन करते हुए पाठक के हृदय भी उस धोखेबाज के प्रति सहृदय हो जाते हैं। जीवन में पराजित होने तथा मात खा जानेपर प्राय: मनुष्य अपना विवेक तथा संतुलन खो बैठता है। 'लाल सेना की हवाई उड़ान के नीचे' इस निबंधव्दारा स्पष्ट किया गया है कि मानसिक दृढ़ता तथा संतुलन बनाये रखकर हम आसन्न विपदापर विजय प्राप्त कर सकते हैं। गुड बेचनेवाले का ततैये के बीच स्थिर रहना, चाचा मधुसूदन की निड़रता (किसी को भी देखकर भौंकनेवाला टाइगर, चाचा मधुसूदन के उसके नजदिक से दृढता तथा शांतिसे जानेपर भी भौंका नहीं) आदी उदाहरणों से स्पष्ट किया गया हैं कि 'घबराहट का अवसर आनेपर जिनके मन अस्थिर नहीं होते, वे ही वास्तव में धीर पुरूष हैं।(7) प्रभाकरजी के अनुसार ईश्वर विश्वास या आत्मविश्वास से यह स्थिरता और दृढ़ता आती है। साथ ही मानव-जीवन के लिए संदेशा दिया है कि - 'घबराये मनुष्य। तेरे भीतर ईश्वर की विभूति है, खुदा का नूर है। मन को शान्त कर, हाथों की मुठ्ठियाँ बाँध, अपने रास्तेपर पैर बढा। रास्तें की रूकावटे कायरों की रूकावटे हैं।(8) मानव चिंतन के विविध आयामों को स्पर्श करता हुआ, उसका समाधान करता हुआ 'जिंदगी मुसकरायी' निबंध संग्रह मानव मन की परतों को खोलता है। 'अजी, क्या करू काम ही नहीं निपटता' निबंध धनी मित्र का नौकर से काम का नियोजन नहीं करना तथा बडे परिवार मे नहाने के समय धोती-तौलिया न मिलना आदि बातों का वर्णन करते हूए कामों में सुव्यवस्थितता और 'काम का समेटो, बिखेरो मत' सिध्दान्त प्रस्तुत करते हुए मानव-चिन्तन के व्यवस्थितता और नियोजन जैसे पहलुओं का मार्ग प्रशस्त करता है। 'कृपया, अपने से पूछिए' निबंध में धोती, पलंग, पलंग की चादर से हाथ पोछंना, छत के जाले न झाडना, कमरे में झाडू न लगाना आदि मानव जाति की साधारण दुर्बलताओंपर ध्यान खिंचा गया है। साथ ही निर्देश दिया है कि, 'कृपया अपने से पूछिए' कि आप अपना मैल साफ करते हैं या दूसरेका।(9) मनुष्य में मनुष्य भी है, भैंसे भी और भेडिये भी। 'कृपया अपने से पूछिये' कि इस कसौटी पर कसने के बाद आप मनुष्य हैं, भैंसे हैं या भेडिये हैं और आखिरी दो में आप आते हैं, तो क्या आज से पहली श्रेणी में आनेका प्रयत्न आरंभ करेंगे।(10) इसप्रकार मानव मात्र की सामान्य 'घरेलु दुर्बलताओं को नष्ट करते हुअे मानव-जीवन को शिस्तबध्द और सचारू रूप से करने का यह प्रयास हैं।

लोकशिक्षण युक्त चिंतन - भारत में जनता का राज्य है। लोकशाही है। इस कारण लोगों में शिक्षा और अनुशासन होना आवश्यक है। विदयार्थीवर्गमें, लोगों में साथ ही शासन करनेवाले सांसदो में भी अनुशासन होना जरूरी है। प्रभाकरजी ने पंडीत नेहरु जी से बातचीत करते हुए कहा - पंडीतजी, यह पीढ़ी तो सड़को, पुलो, कारखानों और भवनों में लगी हैं। इंटे उँची हो रही हैं, पर आदमी राष्ट्रीय चरित्र और आत्मानुशासन को भूलकर बौना होता जा रहा है।(11) लोकशिक्षण के बारे में निबंधो में व्यक्तियों के अधिकार तथा कर्तव्य की चर्चा की गयी हैं। 'कमरे की बादशाहत' में सुचित किया गया हैं कि आप अपने कमरे के बादशाह है हमें यह भी याद रखना हैं कि पड़ोस के कमरे में भी दूसरा बादशाह है। साथ ही स्पष्ट किया गया है कि हर एक की आजादी वहातक होती है जहाँ से पड़ौसी की आजादी सुरू होती है। 'मैं और मैं' में स्पष्ट हैं कि हर एक ने अपने दोषों को सुधारना है, दूसरे के दोष नहीं देखना हैं, उनकी उज्वल बाजू को देखे और गर्व महसूस करें। हर एक की जिंदगी ऐसी हो कि हम और दूसरे भी खुशहाल हो, पड़ौस-नगर-राष्ट्र और विश्व मुसकरा सके और सभी की सही रास्ता मिल सके। हमेशा क्रियाशील और रचनात्मक रहने का संदेशा भी दिया गया है। मैं और मेरा 'घर जैसे निबंध व्दारा अधिकार और कर्तव्य की चर्चा करते हुए 'घर,

आश्रम तथा होटल के बीच का अंतर स्पष्ट किया गया है। पड़ौसियों से मिलते-जुलते रहना चाहिए, उनपर बोझ नहीं बनना है, साथ ही पड़ौसियों के साथ अॅडजेसमेन्ट करना चाहिए। पड़ौसियों में लाख बुराईयाँ हो अथवा आप में, एक दूसरे के बुराईयों की छाया दूसरेपर नहीं पडनी चाहिए जैसे चोर और डाकू भी कभी अपने पड़ौस में हाथ नहीं ड़ालते। 'मैं और मेरा नगर' व्दारा नागरी चिंतन को स्पष्ट किया गया है कि अपने नगरवासियों को पारिवारिक सदस्य मानना चाहिए और नगर के मेहमान को अपना मेहमान मानना चाहिए। तभी पारिवारिकता और देशभक्ति फलित होगी। जीवन की यह यात्रा मैं-'घर-पड़ौस-समाज-नगर-राष्ट्र-विश्व तक पहुँचती हैं।

सांस्कृतिक चिंतन - मनुष्य के श्रेष्ठत्तम विकास को अग्रेसर करनेवाली चेतना ही संस्कृती है। संस्कृती और सभ्यता हमारे जीवन का एक अंग है, एक दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति और समाज के स्वास्थ्य के लिए यह आवश्यक है। 'घर-परिवार संस्कृति की पाठशाला है। पड़ौस तथा समाज सभ्यता की पाठशाला है। संस्कृति को अमल में लाने की पध्दति तथा जगह सभ्यता है। मैं और मेरा पड़ौस में यह चिंतन दिखायी देता है। सीता और मीरा अपने युगानुरूप संस्कृति की प्रतीक रही। सीता सामाजिक मर्यादा पालन में तो मीरा मर्यादा भंग करने में अमर होकर दोनो इतिहास में अमर हो गयी। 'पेड, पशु और मनुष्य' में मानव संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य की प्रगतिशीलता के कारण मनुष्य पेड पशु से भिन्न और सुसंस्कृत तथा सभ्य बना है। शुभकामना चिंतन में भारतीय शुभकामना और पाश्चात्य शुभकामना में भेद देखते हुए भारतीय शुभकामना ऋषियों की अर्जित सम्पदा होने के कारण श्रेष्ठ सिध्द हुई है-स्पष्ट किया गया है । एक मुसलमान बेगम छत्रपती शिवाजी महाराज के दरबार में लायी जाती है तो शिवाजी महाराज ने कहा-

'अशीच आमुची आई असती, सुंदर रूपवती।
आम्ही सुंदर झालो असतो, वदले छत्रपती।'

ऐसा कहते हुए पूरे सम्मान के साथ उसके 'घर भेज दिया। यही भारतीय शुभकामना संस्कृति है। मृत्युचिंतन के बारे में भारतीय संस्कृति यह मानती है की मृत्यु के बाद आत्मा एक शरीर को छोड दूसरे में जाती है। (नया जनम लेती है) 'एक कार्ड तीन पत्र' में मृत्युसंबंधी नवीन चिंतन दृष्टि प्रस्तुत है। समवेदना का काम दु:ख को दबाना है, दबे दु:ख को उभारना नहीं। हम 'घाव को सहलाये, उसपर मरहम लगाये, उसे टकोरे नहीं, उधेडे नहीं.... हम दु:खी को समवेदना दे, पर हमारी समवेदना नकली न हो, फूहड न हो।(12)

हास्य व्यंग्यात्मक चिंतन - हास्यव्यंग आज आवश्यकता हो गयी है। उष्ण प्रदेश में शीत हवा और शीत प्रदेश में उष्ण हवा जिस प्रकार आरोग्य के लिए आवश्यक होती है उसी प्रकार आरोग्य के लिए हास्यव्यंग्य आवश्यक हो गया है।

'मैं और मेरा पड़ौस' में नाना प्रकारकी पड़ौसिने के उदाहरण है।
लडनेवाली पड़ौसन -आ पडौसिन लडे।
लडे मेरी जूती जूती मार खसम के।

इस प्रकार हास्यव्यंग्यात्मक लोकगीत पेश कर मानव जीवन के लिए यह गंभीरता विनोद में ढाली गयाी है।

एक चतुर पड़ौसिन का वर्णन - आ पड़ोसन पूडे पो लें।/क्या लग जागा तेरा। आम, फूस, कडौती मेरी। गुड़, घी, मैदा तेरा।

निष्कर्ष - 'जिंदगी मुसकरायी' में स्पष्ट किया गया है कि(13) राष्ट्र एक यंत्र के समान है। व्यक्ति-परिवार-समाज-नगर उसके उपकरण हैं। उपकरणों को सुचारू रूप से चलना आवश्यक है। मुसकरायी हुओ जिंदगी इस वंगण से यह उपकरण सुचारू रूप से चलते हुए राष्ट्र रूपी यंत्र चल सकता है। इस वंगण को बनाने के लिए सत्य, विश्वास और प्रेम की आवश्यकता है। और उसे हमे हमेशा बनाये रखना है। ललित निबंधो की इस जीवन चिंतन रूपी विविध आयामों में पाठक दूरदराज की सैर करते हुए अनेक पहलुओं को सीखता है। आत्मसात करता है, जीवन का नया उत्साह आत्मसात करता है, प्रफुल्लित होता हैं और सार्थकता का एहसास लेकर यात्रा समाप्त करता है। मानव चिंतन के विविध आयामोंरूपी जरतारी वस्त्र में कथ्य की अक्खड़ता में कबीर, शिल्प में तुलसी और निराला, वाग्वैदग्धमें सूर, भावूकता मे मीरा और सहजता में रैदास (14) रूपी चांदी की बूटियाँ प्रकाशमान हो उठी हैं। कूल मिलाकर 'जिंदगी मुसकरायी' भारतीय जीवन शैली के अप्रतिम साधक 'कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर' के ऐसे निबंधो का मोहक संग्रह हैं, जो कहने को निबन्ध हैं लेकिन ये संस्मरण भी हैं, कहानी भी हैं, अनुभव भी हैं, विचार भी हैं, उपदेश भी हैं और इन सबसे बढ़कर एक सह्दय, सत्पुरूष हितैषी और प्रेमी मित्र की रसभरी बातें हैं जो हृदय से निकलकर पाठक के हृदय में समा जाती है, दूसरे शब्दों में ये मन की मुरझाती तुलसी को उदासी से प्रसन्नता के, अवसाद से आल्हाद के, हताशों से उद्यम के, अकर्मण्यता से कर्तण्यता के ओर असफलतासे सफलता के लहलहाते उपवन में रोंप देते हैं।(15)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 हिंदी के प्रमुख निबन्धकार : रचना और शील्प डॉ. गणेश खरे 29 2. जिंदगी मुसकरायी जब वे रौबी को कमरेमें ले गये 61 3 कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर : डॉ. जयप्रकाश 134 चिन्तन और साहित्य नारायणसिंह कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर : चिन्तन और साहित्य 136 5 जिंदगी मुसकरायी धीरे-धीरे जियो 29 6 जिंदगी मुसकरायी लो भिखारी, दूर मजदूर 93 7 जिंदगी मुसकरायी लाल सेना की हवाई उडान के नीचे 70 8 जिंदगी मुसकरायी लाल सेना की हवाई उडान के नीचे 71 9 जिंदगी मुसकरायी कृपया, अपने से पूछिए 140 10 जिंदगी मुसकरायी कृपया, अपने से पूछिए 149 11 कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की साहित्य साधना डॉ. ओमप्रकाश नायर 107

1) हिंदी के प्रमुख निबंधकार : रचना और शिल्प - डॉ. गणेश खरे - अभिलाषा प्रकाशन, कानपूर 2)कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की साहित्य साधना - डॉ. ओमप्रकाश नायर, विकास प्रकाशन, कानपूर (2005) 3) कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर : चिंतन और साहित्य - अभय प्रकाशन, कानपूर (1994) 4) जिंदगी मुसकरायी - कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर - भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली, दसवॉं संस्करण 2003, और तीसरा संस्करण 1964